रात्रि क्लास 17/9/68 :– अभी नई दुनिया और पुरानी यह तो तुम बच्चों को समझाया है। नई दुनिया को कहा जाता है सतयुग, निर्विकारी दुनिया। पुरानी दुनिया को कहा जाता है विकारी दुनिया, रावण की दुनिया। विकारी और निर्विकारी। तो जरूर निर्विकारी नई दुनिया को, विकारी पुरानी दुनिया को कहेंगे। इस समय तो है विकारी दुनिया। जहाँ यह(ल0ना0) रहते उनको निर्विकारी दुनिया कहा जाता। कितना फर्क है। तो फिर क्यों नहीं विकारी से निर्विकारी बन नई दुनिया में जाना चाहिए। यह है भी पुरानी दुनिया। बच्चों को समझ में भी आता है। बात भी साधारण है। सुनते भी हैं भगवानुवाच 5 विकारों को जीतो तो नई दुनिया के मालिक बनो। जगतीजीत बनो। है तो बहुत सहज बात। यह पतित, वह पावन। सतयुग त्रेता नई दुनिया, द्वापर कलियुग पुरानी दुनिया। यह विषस दुनिया भी है। कोई भी सुने तो कहेंगे यह तो ठीक बात है। विकारी से निर्विकारी बनें तब दूसरा जन्म निर्विकारी दुनिया में मिले। यह है सभी के लिए। यह है विकारी दुनिया। निर्विकारी दुनिया में राज्य है ही देवी–देवताओं का। हिन्दू अक्षर तो है नहीं। है ही देवी–देवता धर्म। विकारी दुनिया में अपरमअपार दुख है। मूल बात है पवित्र बनने की। बाप कहते हैं तुम सतोप्रधान पवित्र थे। अभी तमोप्रधान अपवित्र हो। अभी फिर सतोप्रधान बनावे कौन? बनाने वाला बेहद का बाप ही है। वही पतित–पावन है। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पुण्यात्मा बन जावेंगे। कितनी सहज बात है। प्रतिज्ञा करनी है पवित्रता की। रखड़ी बन्धन भी इनकी निशानी है। अभी है संगम। विषस दुनिया और वह है वायसलेस दुनिया। अभी बाप से प्रतिज्ञा करनी है। बाबा हम आपको याद करते–2 पावन बन जावेंगे। बात ही रहती है पावन वायसलेस बनने की। सतयुग में ही निर्विकारी होते हैं। कलियुग में हो न सकें। बाप संगम पर आकर पुरुषोत्तम बनाते हैं। उनमें ताकत है पतित दुनिया को पावन बनाने की। वह बाप है एवर प्योर। समझानी तो बहुत सहज है। सर्विसएबुल की दिल होती होगी जाकर प्रदर्शनी समझाये। अभी यह पतित दुनिया बदलती है। पतितों को पावन बनाकर दुनिया को पलटा देते हैं। सिर्फ पवित्रता की भी बात नहीं; परन्तु 5 विकारों को ही खत्म करना है। क्रोध–लोभ–मोह सबको छोड़ना है। घड़ी–2 भूलें करने से रजिस्टर खराब हो जावेगा। ऐसी–2 बातों को छोड़ देना चाहिए। पुरुषार्थ करना चाहिए। अपन को देखना चाहिए। नारद का भी मिसाल है ना। कोई भी खामी है तो निकाल देना चाहिए। निकलाने बिगर काम न चले। बच्चों को तो अभी स्वर्ग की ही याद है। और कोई को स्वर्ग याद नहीं। तुम सभी बच्चे तैयारी कर रहे हो। पढ़ाई से पोजीशन बड़ा अच्छा मिलता है। बाप की पढ़ाई से यह पोजीशन मिलता है। पतित दुनिया में बहुत मनुष्य हैं। पावन दुनिया में होते हैं एक धर्म। अच्छा। मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।